MAKHANLAL CHATURVEDI NATIONAL UNIVERSITY OF JOURNALISM AND COMMUNICATION

// UNIVERSITY LIBRARY //

-: NEWS CLIPPING SERVICE -:

DATE:08 SEP. 2026

एमसीयू में विद्यार्थियों से जीआरपी के विशेष पुलिस महानिदेशक का संवाद, कहा-

बिछड़ों को परिवार से मिलाने में 'ऑपरेशन हमदर्द' कामयाब

■ 548 रेलवे स्टेशनों पर असहाय लोगों का डिजिटल डोजियर तैयार

स्वदेश संवाददाता ■ भोपाल

रेलवे स्टेशनों पर बेसहारा, भटके और अपनों से बिछड़े लोगों को उनके परिवारों तक पहुंचाने के लिए मध्यप्रदेश जीआरपी की ऑपरेशन हमदर्द पहल पुलिसिंग के मानवीय पक्ष को सामने ला रही है। प्रदेश के 548 रेलवे स्टेशनों पर ऐसे लोगों का डिजिटल डोजियर तैयार किया गया है। तकनीकी संसाधनों और सीसीटीवी फुटेज की मदद से उनकी पहचान कर परिजनों से मिलाने का प्रयास किया जा रहा है।

असहाय की सहायता करना पुलिस का कर्तव्य

जीआरपी के विशेष पुलिस महानिदेशक राजाबाबू सिंह ने माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय के गणेश शंकर विद्यार्थी सभागार में विद्यार्थियों से संवाद के दौरान ऑपरेशन हमदर्द की जानकारी दी।

उन्होंने कहा कि रेलवे स्टेशन अत्यधिक भीड़भाड़ वाले सार्वजनिक स्थल हैं। यहां जरूरतमंद और अपराधी दोनों मौजूद हो सकते हैं। ऐसे में असहाय व्यक्ति की पहचान कर उसे तत्काल सहायता उपलब्ध कराना रेल पुलिस की जिम्मेदारी है। उन्होंने बताया कि कई लोग घर से नाराज होकर या सामाजिक परिस्थितियों के कारण रेलवे स्टेशनों पर पहुंच जाते हैं। कोई व्यक्ति बोलने या समझने में सक्षम नहीं हो तो सीसीटीवी फुटेज सहित डिजिटल साक्ष्यों के जरिए घटनाक्रम को जोड़ा जाता है और उसके परिजनों की तलाश की जाती है।

जनमत निर्माण करती है पत्रकारिता

राजाबाबू सिंह ने पुलिस व्यवस्था में उदारीकरण से लेकर कृत्रिम बुद्धिमत्ता तक आए बदलावों पर भी चर्चा की। उन्होंने कहा कि वर्तमान दौर में नागरिक पत्रकारिता तेजी से बढ़ रही है। पत्रकारिता जनमत निर्माण करती है, इसलिए पत्रकारों की नैतिक जिम्मेदारी भी बढ़ गई है। उन्होंने विद्यार्थियों से उच्च नैतिक मूल्यों के साथ पत्रकारिता में आने का आह्वान किया। कार्यक्रम में कुलसचिव प्रो. पी. शशिकला ने अतिथियों का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के विद्यार्थी, शिक्षक और अधिकारी उपस्थित रहे।

पुलिसिंग की मानवीय मिसाल

विश्वविद्यालय के कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने कहा कि पुलिस के जनहितकारी और जनहितैषी नवाचार पुलिस का अलग चेहरा प्रस्तुत करते हैं। ऑपरेशन हमदर्द पुलिसिंग की मानवीय छवि को समाज में मजबूत करता है।

NEWS CLIPPING SERVICE FROM 'MCNUJC LIBRARY
'SWADESH '08 SEP.2026

एमसीयू में बोले विशेष पुलिस महानिदेशक
बिछड़ों को सहारा देने का नाम ऑपरेशन हमदर्द, ये पुलिस का संवेदनशील चेहरा

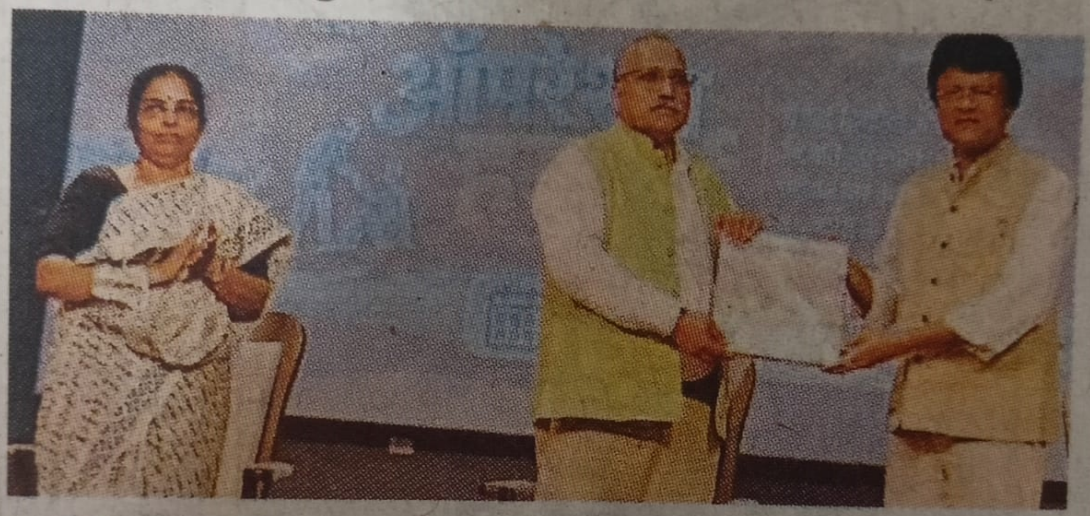

पत्रिका plus रिपोर्टर
patrika.com

भोपाल. माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय में राजकीय रेलवे पुलिस (जीआरपी) के विशेष पुलिस महानिदेशक राजाबाबू सिंह ने विद्यार्थियों से संवाद किया। पुलिसिंग के मानवीय पहलुओं और 'ऑपरेशन हमदर्द' के अनुभवों को साझा किया। भटके और असहाय लोगों को परिजनों से मिलाने की पहल बताया। उन्होंने कहा रेलवे प्लेटफॉर्म पर भीड़ के बीच असहाय लोगों और अपराधियों की पहचान करना चुनौतीपूर्ण है। घर से रूठकर या अन्य सामाजिक कारणों से स्टेशनों पर ही रहने लगते हैं। मध्य प्रदेश जीआरपी ने प्रदेश के 548 रेलवे स्टेशनों पर ऐसे लोगों का डिजिटल डोजियर तैयार किया और 'ऑपरेशन हमदर्द' के माध्यम से उन्हें उनके परिवारों से वापस मिलाया। जो लोग अपनी बात बताने में अक्षम है।

NEWS CLIPPING SERVICE FROM 'MCNUJC LIBRARY
'PATRIKA'08 SEP.2026

'आपरेशन हमदर्द' पुलिस का संवेदनशील चेहरा

एमसीयू में जीआरपी के विशेष पुलिस महानिदेशक राजाबाबू सिंह ने विद्यार्थियों से किया संवाद

नवदुनिया प्रतिनिधि, भोपाल: रेलवे स्टेशन जैसे भीड़भाड़ वाले सार्वजनिक स्थानों पर जरूरतमंद और असहाय लोगों की पहचान कर उन्हें मदद पहुंचाना रेल पुलिस की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है। इसी उद्देश्य से मध्य प्रदेश राजकीय रेल पुलिस (जीआरपी) द्वारा चलाया जा रहा 'आपरेशन हमदर्द' पुलिसिंग के मानवीय और संवेदनशील पक्ष को सामने लाने वाला महत्वपूर्ण प्रयोग है। यह बात जीआरपी के विशेष पुलिस महानिदेशक राजाबाबू सिंह ने सोमवार को माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता व संचार विश्वविद्यालय (एमसीयू) में विद्यार्थियों से संवाद के दौरान कही।

गणेश शंकर विद्यार्थी सभागार में आयोजित कार्यक्रम में उन्होंने बताया कि प्रदेश के 548 रेलवे स्टेशनों पर ऐसे लोगों का डिजिटल डोजियर तैयार किया गया है, जो विभिन्न कारणों से रेलवे परिसरों में रहते हैं। इनमें घर से नाराज होकर आए लोग, सामाजिक परिस्थितियों के कारण घर छोड़ने वाले तथा अन्य असहाय लोग शामिल हैं। जीआरपी ने इनकी पहचान और जानकारी जुटाकर कई लोगों को उनके परिजनों से मिलवाया है। राजाबाबू सिंह ने कहा कि औपनिवेशिक दौर से बनी पुलिस की कठोर छवि को बदलने की दिशा में भी 'आपरेशन हमदर्द' एक प्रयास है। उन्होंने कहा कि हर व्यक्ति की अपनी कहानी होती है और पुलिस का दायित्व केवल अपराध नियंत्रण तक सीमित नहीं है। किसी अज्ञात या बोलने-समझने में असमर्थ व्यक्ति की पहचान के लिए सीसीटीवी फुटेज सहित डिजिटल साक्ष्यों का विश्लेषण कर घटनाक्रमों को जोड़ा जाता है और उसके परिजनों तक पहुंचने का प्रयास किया जाता है। उन्होंने पत्रकारिता में नैतिक मूल्यों की आवश्यकता बताते हुए कहा कि आज सिटिजन जर्नलिज्म का दौर है। पत्रकारिता नरेटिव तैयार करने के साथ जनमत निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, इसलिए पत्रकारों की नैतिक जिम्मेदारी और बढ़ जाती है। विश्वविद्यालय के कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने कहा कि पुलिस के जनहितकारी नवाचार उसका मानवीय चेहरा सामने लाते हैं। उन्होंने विद्यार्थियों से अपील की कि वे पत्रकारिता को केवल पेशा न मानकर समाज के प्रति जिम्मेदारी के रूप में देखें। कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने पुलिसिंग, डिजिटल तकनीक और पत्रकारिता की बदलती भूमिका से जुड़े सवाल भी पूछे।

एमसीयू में विशेष पुलिस महानिदेशक राजाबाबू विद्यार्थियों से संवाद करते हुए। ● सौजन्य: आयोजक

NEWS CLIPPING SERVICE FROM 'MCNUJC LIBRARY
'NAVDUNIYA '08 SEP.2026

ऑपरेशन हमदर्द पुलिस का संवेदनशील चेहरा : राजाबाबू

नईदुनिया प्रतिनिधि, भोपालः मध्य प्रदेश राजकीय रेलवे पुलिस (जीआरपी) ने प्रदेश के 548 रेलवे स्टेशनों पर जरूरतमंद और असहाय लोगों का डिजिटल डोजियर तैयार कर उन्हें परिजनों से मिलाने की पहल की है। इसे पुलिसिंग की मानवीय और संवेदनशील पहल बताते हुए रेल विशेष पुलिस महानिदेशक राजाबाबू सिंह ने माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय (एमसीयू) में विद्यार्थियों से संवाद किया।

गणेश शंकर सभागार में आयोजित कार्यक्रम में सिंह ने कहा कि रेलवे स्टेशन भीड़भाड़ वाले सार्वजनिक स्थल हैं, जहां असहाय लोगों और अपराधियों की पहचान चुनौतीपूर्ण होती है। ऑपरेशन हमदर्द के तहत घर से रूठकर या सामाजिक कारणों से स्टेशन पर रह रहे लोगों की पहचान कर उनके परिजनों से मिलाया गया। उन्होंने कहा कि पहचानविहीन या बोलने-समझने में अक्षम व्यक्ति के मामले में सीसीटीवी फुटेज और अन्य डिजिटल साक्ष्यों के माध्यम से घटनाक्रम जोड़कर परिजनों तक पहुंचा जाता है।

उन्होंने पत्रकारिता में नैतिक मूल्यों की आवश्यकता पर भी जोर दिया। कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने इसे पुलिस की मानवीय छवि स्थापित करने वाला नवाचार बताया।

NEWS CLIPPING SERVICE FROM 'MCNUJC LIBRARY
'DANIK NAIDUNIYA '08 SEP.2026

संवाद

एमसीयू में जीआरपी के विशेष पुलिस महानिदेशक से विद्यार्थियों का संवाद

पुलिस का संवेदनशील चेहरा है ऑपरेशन हमदर्द : राजाबाबू सिंह

स्वदेश ज्योति संवाददाता, भोपाल

रेलवे प्लेटफार्म बेहद भीड़भाड़ वाले सार्वजनिक स्थल होते हैं, जहां सैकड़ों-हजारों लोगों की आवाजाही होती है। ऐसी भीड़ में जरूरतमंद, असहाय और अपराधी तत्वों की पहचान करना चुनौतीपूर्ण होता है। ऐसे में जरूरतमंद व्यक्ति की पहचान कर उसे तत्काल सहायता उपलब्ध कराना रेल पुलिस की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है। इसी उद्देश्य से मध्य प्रदेश राजकीय रेल पुलिस (जीआरपी) ने ऑपरेशन हमदर्द की शुरुआत की है, जो प्रोएक्टिव पुलिसिंग का एक मानवीय प्रयोग है। माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय (एमसीयू) के गणेश शंकर विद्यार्थी सभागार में आयोजित विद्यार्थियों के साथ संवाद कार्यक्रम में विशेष पुलिस महानिदेशक, रेल, भोपाल राजाबाबू सिंह ने ऑपरेशन हमदर्द की जानकारी साझा की। उन्होंने बताया कि मध्य प्रदेश जीआरपी ने प्रदेशभर के 548 रेलवे स्टेशनों पर ऐसे लोगों का डिजिटल डोजियर तैयार किया है, जो विभिन्न परिस्थितियों के कारण

रेलवे परिसरों में रह रहे थे। इनमें घर से नाराज होकर निकले लोग, सामाजिक परिस्थितियों के कारण परिवार से बिछड़े लोग तथा ऐसे असहाय व्यक्ति शामिल हैं, जो अपने बारे में जानकारी देने में सक्षम नहीं थे। ऑपरेशन हमदर्द के माध्यम से जीआरपी ने ऐसे लोगों की पहचान कर उन्हें उनके परिजनों से मिलाने का कार्य किया है।

औपनिवेशिक छवि से अलग मानवीय पुलिसिंग

राजाबाबू सिंह ने कहा कि ऑपरेशन हमदर्द पुलिस की औपनिवेशिक और कठोर छवि से बाहर निकलकर संवेदनशील एवं मानवीय चेहरा प्रस्तुत करने का प्रयास है। असहाय लोगों से संवाद करना, उनकी समस्याओं को समझना और उन्हें उनके परिवारों तक पहुंचाना पुलिसिंग के मानवीय पक्ष को मजबूत करता है। उन्होंने विद्यार्थियों से संवाद करते हुए भारत में पुलिस व्यवस्था में आए बदलावों पर भी चर्चा की। उदारीकरण के दौर से लेकर वर्तमान आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) के समय तक पुलिसिंग में तकनीक और कार्यप्रणाली में हुए बदलावों को उन्होंने विस्तार से समझाया। कार्यक्रम में एमसीयू के कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने कहा कि पुलिस के पब्लिक फ्रेंडली नवाचार पुलिस का एक अलग चेहरा समाज के सामने प्रस्तुत करते हैं। उन्होंने कहा कि ऑपरेशन हमदर्द पुलिसिंग की

डिजिटल तकनीक से पहचान और परिजनों तक पहुंच

राजाबाबू सिंह ने बताया कि यदि कोई व्यक्ति अपनी पहचान बताने अथवा अपनी बात समझाने में सक्षम नहीं है, तो पुलिस डिजिटल तकनीक की मदद लेती है। सीसीटीवी फुटेज और अन्य डिजिटल साक्ष्यों के माध्यम से घटनाक्रम को जोड़कर व्यक्ति की पहचान करने का प्रयास किया जाता है। इसके बाद उसके परिजनों का पता लगाकर उसे परिवार से मिलाया जाता है। उन्होंने कहा कि हर व्यक्ति के जीवन की अपनी एक कहानी होती है। जीआरपी ने रेलवे परिसरों में मौजूद असहाय लोगों की इन कहानियों को समझने और उनकी मदद करने के लिए ऑपरेशन हमदर्द के तहत नई पहल की है।

मानवीय छवि को समाज में स्थापित करने वाला महत्वपूर्ण प्रयास है। कार्यक्रम के अंत में विश्वविद्यालय की कुलसचिव प्रोफेसर पी. शशिकला ने अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त किया। संवाद कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के विद्यार्थी, शिक्षक और अधिकारी उपस्थित रहे।

NEWS CLIPPING SERVICE FROM 'MCNUJC LIBRARY
'SWADESH JYOTI'08 SEP.2026

पुलिस महानिदेशक का विद्यार्थियों का संवाद

स्टेशनों पर रहने वालों के लिए सरकार ने शुरू किया 'ऑपरेशन हमदर्द'

हरिभूमि न्यूज ⏭ भोपाल

एमसीयू के गणेश शंकर सभागार में आपरेशन हमदर्द पर व्याख्यान आयोजित किया गया, जिसमें विशेष पुलिस महानिदेशक, रेल, भोपाल राजाबाबू सिंह ने विद्यार्थियों से संवाद में 'आपरेशन हमदर्द' पर जानकारी दी। उन्होंने कहा कि रेलवे प्लेटफार्म एक बहुत ही भीड़भाड़ वाला पब्लिक प्लेस है। वहां पर सैकड़ों और हजारों लोग होते हैं। लेकिन इतनी भीड़ में आसानी से किसी को भी पहचानना बहुत मुश्किल है। भीड़भाड़ बड़े वाले इन रेल स्टेशनों में असहाय लोग और अपराधी एक ही समय पर उपस्थित हो सकते हैं। ऐसे में जरूरतमंद को पहचान कर उस तक तुरंत मदद पहुंचाना रेल पुलिस का प्रमुख काम होता है। अनेको कारणों से कई लोग स्टेशनों पर ही रहते हैं। उनकी मदद के लिए ऑपरेशन हमदर्द मध्य प्रदेश राजकीय रेल पुलिस का प्रोएक्टिव पुलिसिंग का एक प्रयोग है।

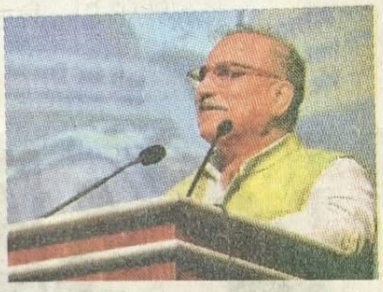

प्रदेशभर के 548 स्थानों पर लोगों को बनाया डिजिटल डोजियर

उन्होंने कहा कि प्रदेश की शासकीय रेलवे पुलिस ने प्रदेशभर के 548 रेलवे स्टेशनों पर ऐसे लोगों का डिजिटल डोजियर बनाया। इसमें ऐसे लोगों का रिकॉर्ड दर्ज किया गया। ऐसे लोगों में अपने घरों से रूठ कर आए लोग, अनेकों सामाजिक कारणों से अपने घर छोड़कर आए लोग शामिल थे। इन लोगों को आपरेशन हमदर्द के तहत मप्र की जीआरपी ने उनके परिजनों से मिलावाया।

NEWS CLIPPING SERVICE FROM 'MCNUJC LIBRARY
'HARIBHOOMI '08 SEP.2026

दैनिक भास्कर भोपाल सिटी भास्कर 08-09-2026

'ऑपरेशन हमदर्द' से बदली पुलिस की तस्वीर...

सिटी रिपोर्टर • पुलिस की पहचान सिर्फ अपराध रोकने और कार्रवाई करने तक सीमित नहीं है, जरूरतमंद तक पहुंचकर उसकी मदद करना भी पुलिसिंग का अहम हिस्सा है। मध्यप्रदेश जीआरपी का 'ऑपरेशन हमदर्द' इसी संवेदनशील पुलिसिंग का उदाहरण है। एमसीयू में विद्यार्थियों से संवाद के दौरान जीआरपी के विशेष पुलिस महानिदेशक राजाबाबू सिंह ने इस पहल के साथ पुलिसिंग और पत्रकारिता में बदलती तकनीक और चुनौतियों पर चर्चा की। सिंह ने बताया कि प्रदेश के 548 रेलवे स्टेशनों पर असहाय, लापता और घर छोड़कर आए लोगों का डिजिटल डोजियर तैयार किया गया। सीसीटीवी फुटेज और अन्य डिजिटल साक्ष्यों की मदद से उनकी पहचान कर परिजनों तक पहुंचाने का प्रयास किया गया।

नैतिकता सबसे जरूरी...

विद्यार्थियों से संवाद में उन्होंने कहा कि आज सिटिजन जर्नलिज्म के दौर में पत्रकारिता सिर्फ सूचना देने तक सीमित नहीं है, बल्कि वह नरेटिव और जनमत भी तैयार करती है। इसलिए पत्रकारिता के विद्यार्थियों के लिए उच्च नैतिक मूल्य व जिम्मेदारी बेहद जरूरी हैं। एमसीयू के कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने ऑपरेशन हमदर्द को पुलिस की पब्लिक फ्रेंडली पहल बताया।